REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

किराणा घराणे के गायक स्वरभास्कर पं. भीमसेन जोशी

डॉ वनिता भोपत
सहाय्यक प्राध्यापक , श्री शिवाजी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अकोला.

सारांश :–

भारतीय संस्कृती मे उत्तरभारतीस शास्त्रीय सगीत की एक महान परम्परारही है! जैसमे अनेक गुणीजनो ने अपने अपने ढंगसे योगदान दिया है! सभी उच्चकरेटी के कलाकार केवल परम्परा से प्रात्प विद्या का ही प्रस्तुतीकरण नही करते वरन अपनी विचार शीलता एवं प्रयोगशिलता से परम्पराको अपने ढंग से प्रवाहमान रखते है! ऐसे चेतनाशील कलाकारो मे से भी ऐसे कलाकार कमही होते है!जो अपनी कला के बारे मे लगातार चिंतन – मनन करते है! और ऐसे गुणीजन परम्परा मे रहते हुये भी प्रयोगशिलता का साहस दिखाते है! तथा कला के क्षेत्र मे नयी राहो के अन्वेषी बनते है!

उद्देश :–

संगीत साधना के माध्यम से परम व्यक्तिमान से सान्निध्य स्थापित करने लिए एकांत यत्नशिल कलाकार ही सच्चा परमान्द साधक है! आध्यात्मिक दृष्टि ज्ञान का अधिकारी है! आदर्श गुरू है! पं. भीमसेन जोशी इसी कोटी के कलाकार तथा गुरू थे! ठस उपरोक्त विषय पर अध्ययन किया है!

प्रस्तावना

संगीत की आराधना से ही अंतर्मुखता की पहली सीढी शुरू होती है! तब संगीत स्वतः सुखाय हो जाता है ! आज के हिंदुस्तानी संगीत के सर्वाधिक लोकप्रिय गायक पं. भीमसेन जोशी का संगीत वजनदार और अलंकारीक और संवेदनपूर्ण है मुक्त ख्यालिय है ! यद्यपी उनका संत–वाणी कार्यक्रम अत्याधिक जनप्रिय है! शास्त्रीय संगीत की समृध्द परंपरा मे उनका अटुट विश्वास है! और उन्होने न केवल संगीत की शुध्दता को कायम रखा है ! बल्की उसके स्वरूप को विस्तृत किया है! वे ख्याल के सभी अंगो को संतुलीत और उत्कृष्ठ ढंग से पेश करने मे दक्ष थे! डनका प्रारंभिक स्वर षड्ज ही वातावरण को संगीतमय बना देता है! प्रस्तुति मे आलाप बोलतानो एव तानो का रूप पुर्णता के साथ निखरता है

उनकी सफलता का एक और कारण है उनका आध्यात्मिक दृष्टिकोन और यौगिक अनुशासन ! श्वास – नियंत्राण और विभिन्न मुद्राओ का प्रयोग उनके संपूर्ण शरीर के क्रिया–चंचल भाव एवं लय की आनंदानूभूती को दरसाता है! मुख्य बात यह है की पं. भीमसेन जोशीजीने हिंदुस्तानी संगीत को अर्थ – ततव प्रदान किया है! वे स्वर नही गाते बल्कि विषय को संगीतात्मक के साथ चित्रित करते है! उनका मतह ै! हर स्वर के लगाव मे भावना है! महत्व को आत्मसात करना चाहिए वे केहते है भारतीय संगीत शाश्वत है उस पर परिचमी प्रभावनही है! वे रागों के समय – बंधन मे विश्वास करते है! क्योंकी निर्धारित समय पर प्रस्तुत राग अच्छे लगते है! श्रृतियो के संबंध मे उनकी मान्यता है कि वे स्वतः लगती है उनका अलग अलग प्रदर्शन संभव नही है!

पं. भिमसेन जोशी का जन्म कर्नाटक मे धारवाड जिले के गदग मे 4 फरवरी 1922 को रथसप्मी के दिन

हुवा उनके पिता पं. गुरूराज भाषाविद् और कुशल शिक्षक थे! माताश्रीमती गोदावरी बाई भक्ती वृत्ती की महिला थी और कन्नड भजन गाया करती थी! गयन मे भीमसेनजीकी रूची अपनी माता के कारण ही उत्पन्न हुई सात वर्ष की आयुमे ही उनका संगीत प्रेम तीव्र हो गया

गव की एक दुकान पर बजने वाले उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के रिकार्ड (राग वसंत मे कमवा ब्रज और ठुमरी पियाबिन) ने भीमसेन के कोमल मन को आत्यधक प्रभावि कर दीया

उन्होने श्रीमती केसरबाई केरकर के गायन के खुले से आवाज के लगाव और ख्या लमे लय–आबध्द स्वरूप को ग्रहण किया उस्ताद अमीर खॉ की गायकी का भी उनपर प्रभाव पडा ग्वालियर मे उन्होने माधव संगीत विद्यालय मे. प. कृष्णराव शंकर पंडित और पं. राजाभैया पुछवाले से शिक्षा ग्रहण कि उस्ताद हफिज अली खॉ से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया अेत मे पं. रामभाऊ कुदगोलकर 'सवाई गंधर्व से शिक्षा प्राप्त की

पं. भीमसेन के गााायन कार्यक्रमो का आरेभ छोटी घरेलु बैठको से हुआ और उन्हे रसिक समान से पूरा समर्थन मिला रामपुर के मुश्माक हुसैन खॉ से छ माह तक शिक्षा की उन्होन नट मल्हार सीखा रेडीओ कार्यक्रमो से उन्हे प्रसिध्दी मिली 1964 और 1982 के बिच उन्होने विभिन्न देशोंकी यात्रा की प्रतिवर्ष पुणे मे सवाई ग्रर्धव संगीत समारोह का आयोजन करते है सन 1972 में पं. भीमसेन जोशी को भारत सरकारने 'पद्मश्री अलकरण प्रदान किया 1975 मे संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार मीला गणतंत्रा–दिवस पर 'पद्मविभुषण' अंलकरण से भी विभुषित किया

केरल सरकार द्वारा स्वामी संगीता पुरस्कार 2005 कर्नाटक सरकार द्वारा 'कर्नाटक रत्न पुरस्कार 2009 मे 'भारत रत्न' पुरस्कार से विभुषीत कीया पं. भीमसेन जोशीने गाये हुये

मिले सुर मेरा तुम्हारा कोई नही भुल सकता पं. भीमसेन जोशी जी ने 2011 मे अपना देह त्याग दिया ! ऐसे महान व्यक्ती को शतः शतः प्रणाम

निष्कर्ष –

श्रृति– मधुर कंठ और वजनदार आवाज के धनि पं. भीमसेनजीने भावना की ताव्रता और राग के शास्त्रीय स्वरूप को समन्वित किया है! डनके गायन मे अन्तर्दशी मननशील व्यक्तित्व का स्पर्श हे! उत्स्ताद अब्दुल करीम खॉ और सवाई गंधर्व की परम्परा का निवाह करते उन्होने एक नया महल खडा किया है! न्ये युग की धारा के अनुरूप उनका कलापुर्ण सर्जन और नवरूपायन भी दनूठा है! यह उनकी प्रतिभा और बुध्दि–कौशल का चमत्कार है!

संदर्भ :

1 भारतीय संगीत के प्रमुख स्तंम्भ लेखक पं. मदनलाल व्यास सम्पादक रविन्द्रनाथ बेहोरे
2 स्वरयोगिनी डॉ प्रभा अत्रे एक बहुआयामी व्यक्तित्व डॉ चेतना बनवत
3 संगीत कला विहार